[परम... ...ल फकीर साहब ... महारा...]

मनुष्य बनो

انسان بنو

मानवता के मुख्य नियम

वा०मू० ४-५०

निष्काम कर्म, ... पालन,

मनुष्य के धर्म नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ४-५० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल
सम्पादक व मैनेजर

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णं मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❀ मनुष्य बनो ❀

वर्ष २१	माह सं० २०२९ वि० फरवरी सन् १९७३	सं० ५/२४३

❀ विनती ❀

गुरु स्वामी तुम मेरी करो सहाय ॥
मैं बालक तुम मात पिता हो, आया शरण तुम्हारे ।
अब तो चिन्ता चित नहिं व्यापे तुम हो सदा रखवारे ॥ मेरी०
मैं अनजान कुछ जानों नाहीं, बाल विनय सुन लीजे ।
मांगन की विधि मोहि न आवे, जो भावे सो दीजे ॥ मेरी०
सतगुरु शरण रतन घन खानी, चरण शरण नित मांगूं ।
और कोई नहिं चाह है मन में, पद सरोज में लागूं ॥ मेरी०
तुम्हारी गोद खेलूं दिन राती, आनन्द चित बसाऊँ ।
दुख कलेश नहिं मोहि सतावे, नाम सुमिर हर्षाऊँ ॥ मेरी०
राधास्वामी परम दयाला, दया से लो अपनाई ।
करम न व्यापे भरम न व्यापे, सदा गहूँ शरनाई ॥ मेरी०

सुनहरी नियम

अपनी निरख परख (क्रमशः)

कहने को तो परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज ने हर तरह पर अमली पहलू से समझाने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। हम भी उनके ही अनुभवों के आधार पर यह नियम अपने शब्दों में लिख रहे हैं मगर इनसे लाभ तब ही हो सकता है जब बात आपकी समझ में बैठ जाय और उस पर आरूढ़ हो जाँय मगर देखने में आ रहा है कि 'मनुष्य बनो' को पढ़ने वाले तो बहुत हैं मगर करने वाले थोड़े से आदमी हैं। यदि आप सचमुच जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं तो अपने विचारों और कृत्यों में सुधार करते जांय। तब ही महाराज जी का कथन सार्थक हो सकता है।

अच्छा तो यह है कि आप हर समय अपने विचारों और कृत्यों की निगरानी रक्खें और उनको गलत रास्ते पर न जाने दें। जहां गलती होने की सम्भावना हो, तुरन्त सुमिरन ध्यान की ओर मन को लगायें और प्रार्थना करें कि ऐ मालिक हमको सद्मार्ग पर ले चल। यदि यह भी सम्भव न हो तो आप रात्रि को सोने से पहिले अपने दिन भर के कार्यों पर विचार कीजिये कि हमने क्या-क्या गलती की है। फिर उस पर पश्चाताप कीजिये कि अब सावधान रहेंगे। तीसरे एक डायरी बना लीजिये और उसमें अपनी गलतियों को नोट करते जाइये और उनको छोड़ने के लिये कटिबद्ध हो जाये।

इसके उपरान्त एक और सरल उपाय यह भी है कि अपने अवगुणों के प्रतिकूल जो गुण हों उन्हें हर समय धारण करने का प्रयत्न करते रहिये। उदाहरण से आप यों समझ लीजिये कि आप किसी से शत्रुता रखते हैं अथवा कोई आदमी आपको हानि पहुँचाता है आपको परेशान करता है और आपके मन में भी उसके प्रति घृणा

द्वेष है अथवा बदला लेने की भावना है तो उस विचार को छोड़कर आप अन्तर में अथवा मन से इससे प्रेम रखने के भाव को जाग्रत कीजिये अथवा उसका भला चाहते रहिये और प्रार्थना करते रहिये कि आपके द्वारा उसका कोई अनिष्ट न हो।

जब यह भावना आपके मन में दृढ़ हो जायगी तो कुछ दिनों में आप स्वयं अनुभव करेंगे और देखेंगे कि दूसरा व्यक्ति आपको कोई हानि नहीं पहुँचा सका और उसको अपने दुष्कर्म का दण्ड मिल रहा है। इस तरह नित्यप्रति करने से आपके मन से घृणा द्वेष, शत्रुता के विचार बिल्कुल नहीं उठेंगे और यह अवगुण आप ही छूट जायगा। इसी प्रकार और भी अवगुणों को दूर किया जा सकता है मगर यह बातें उनको हैं जो अपने जीवन में सुधार करना चाहते हैं। क्रमशः

—देवीचरन मीतल

'मनुष्य बनो' का चन्दा

हम प्रतिमास अपने ग्राहकों को चन्दा भेजने की याद दिलाते रहते हैं। बहुत सों को चिट लगाकर भी भेजते हैं मगर क्या कहें ग्राहक महोदय इस ओर ध्यान ही नहीं देते। ऐसी दशा में और बातों पर अमल करना तो और भी कठिन है। 'मनुष्य बनो' के ग्राहकों को यह उचित नहीं है कि वे बार-बार लिखने पर भी ध्यान न दें। परमदयाल जी कहा करते हैं कि मुफ्त की चीज से कोई लाभ नहीं होता। इसलिये आपको तुरन्त चन्दा भेज देना चाहिये। जो लोग वास्तव में चन्दा भेजने में असमर्थ हों वह हमें लिख दें। हम उनको मुफ्त भेजते रहेंगे।

—देवीचरन मीतल

—:o:—

नवीन पुस्तकें

दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के हिन्दी के शब्दों को ठा० पदमसिंह जी ने बड़े परिश्रम से संग्रह किया था। वे कुल शब्द 'शिव शब्द सागर" के नाम से मानवता मन्दिर होशियारपुर की ओर से प्रकाशित किये जा रहे हैं। पुस्तक मोटे टाइप में तथा बड़े आकार में है। दो तीन जिल्द होंगी। इसका मूल्य छपने पर लिखा जायगा। पुस्तकें थोड़ी संख्या में छपाई गई हैं अतः तुरन्त या तो मानवता मन्दिर होशियारपुर को या 'मनुष्य बनो' कार्यालय को पत्र भेजकर अपना नाम दर्ज करालें।

"सार का सार" तथा "सत सनातन धर्म अथवा सत मानव धर्म" नामी पुस्तकों की अधिक मांग होने के कारण द्वितीय बार प्रेकाशित कराया गया है। जिन भाइयों को आवश्यकता हो वह तुरन्त मंगा लें। दोनों पुस्तकें यथा नाम तथा गुण वाली हैं और प्रत्येक घर में रहने योग्य हैं। हर एक दृष्टि से उपयोगी हैं जो जीवन व्यवहार में तथा परमार्थ प्राप्ति के साधनों से परिपूर्ण हैं।

—देवीचरन मीतल

परिवार नियोजन

आज के समय में अधिक संतान होना दुख और आपत्ति का कारण है। शुद्ध घी दूध का अभावसाही है। खान-पान की वस्तुयें कपड़ा, अत्यन्त मंहगे शिक्षा का भारी व्यय, फिर विवाह आदि का व्यय जान निकाल लेता है। ऐसी परिस्थिति में सिवाय "परिवार नियोजन" के और कोई चारा नहीं है। इसके चित्र भी इस अंक में लगे हुये हैं।

* छोटे छोटे नुक्ते *

(ले०—महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज)

(१) संसार भिन्नता का जगत है। यहाँ दिन के साथ रात है। सुबह के साथ शाम है। रोग के साथ निरोगता है। बुराई के साथ भलाई है। इसलिये आपत्ति के समय घबराने की आवश्यकता नहीं है। यह आपत्ति भी अस्थायी (आरज़ी) है। यह भी दूर होगी और आशा पूरी होने का अवसर हाथ आयेगा।

(२) दूसरों के सुधारने की कोशिश व्यर्थ है। स्वयं सुधरो, संभलो और दूसरों के लिये उदाहरण बनो, इसी में सच्ची बहबूदी है।

(३) जो व्यक्ति दूसरों के ऐबों को तुम्हारे सामने बताता है वह तुम्हारे ऐबों को भी अवश्य दूसरों से कहेगा। यह भी बनी बनाई बात है।

(४) जहाँ तक हो सके दूसरों की भलाई का ख्याल हमेशा दृष्टि में रक्खो। इसका अभ्यास तुमको भला बना देगा।

(५) कुल पापों की जड़ हिंसा (दिल दुखाना) है। दिल दुखाने से बचो और तुम सब पापों से बचे हुये हो।

(६) दूसरों की टीका टिप्पणी में समय नष्ट न करो। हर एक व्यक्ति से गलती होती है। जान बूझकर कोई ऐसा काम नहीं करना चाहता कि लोगों को नुक्ताचीनी और दोष दर्शन का अवसर मिले।

(७) जो आज बुरे हैं वह कल अच्छे हो जायेंगे। इसलिये घृणा किसी से भी न करनी चाहिये किन्तु घृणा की जगह हमदर्दी को काम में लाओ तो अधिक अच्छा है।

(८) विभिन्न चित्तवृति के लोग तुम्हारे साथ इसलिये रक्खे गये हैं ताकि तुम्हारी गढ़त होती चले और तुम्हारी आदत और रंग ढंग दिन दिन निखरते जाँय। इस अवस्था को गनीमत समझो और शिकायत का अवसर कभी

(९) यदि कोई आदमी तुमसे सहायता चाहता है तो यथाशक्ति उसकी सहायता का ख्याल रक्खो। जो तुमसे ऐसी सहायता चाहता है वह वास्तव में तुम्हें सम्मान और बड़प्पन देता है।

(१०) सच बोलना हमेशा और हर दशा में अच्छा है लेकिन जिस सच बोलने में चित्त दुखे और झगड़े का अंदेशा हो उससे बचना ही उचित है।

(११) अपने कर्त्तव्य को हमेशा मन लगाकर पूरा करो। यह आदत तुम्हें गिरी दशा में न रहने देगी। सम्भव है प्रत्यक्ष में तुम्हें कष्ट होता हो लेकिन परिणाम सुखदायक होगा।

(१२) गुलदस्ते की सुन्दरता केवल इसी बात में है कि उसमें फूल पत्तियाँ कांटे सब अपनी-अपनी जगह पर रहें। इसी तरह सृष्टि के प्रबन्ध में सुन्दरता भी इसी बात में है कि हर एक तरह के और हर तबियत के लोग विरोधी वृति वालों के साथ-साथ रहें।

(१३) एक चोर है जो चोरी करने का आदी हो गया है। यह आदत निस्संदेह बुरी है मगर उसका सम्मान उन्नति की ओर है। जब वह इस आदत का अन्त कर देगा उसके जीवन का रुझान आप ही आप बदल जायगा। यदि विचार करोगे तो ऐसे अनेकों उदाहरण तुम्हारे सामने मिलेंगे।

(१४) यदि किसी के साथ सद्व्यवहार करते हो तो उससे अहसान मत जताया करो। बहुत गंदी आदत है। इससे अच्छा तो यही होता कि तुम उसके साथ व्यवहार ही न करते।

(१५) अपनी योग्यता और बुद्धिमता की डींग मारना मूर्खता है। यदि वास्तव में यह गुण हैं तो ये तुम्हारे कामों से स्वयं प्रगट हुआ करेंगे। सूर्य से उसकी किरणें स्वयं निकलती रहती हैं।

(१६) जो काम करो मन लगाकर करो। यदि काम में मन नहीं लगता है तो उसे तुरन्त छोड़दो वर्ना वह काम तुम्हारे लिये लानत का काम होगा।

(१७) कटु बचन से बचो और मीठा बोलने की आदत डालो। इसमें कुछ खर्च नहीं होता। साथ ही साथ सर्वप्रिय बनते जाओगे।

(१८) बेकारी में पुस्तकों से बढ़कर कोई अच्छा साथी

मगर मस्तिष्क में व्यर्थ बातों का भंडार इकट्ठा न किया जाय। काम की यदि थोड़ी बातें हृदयांकित हो जायें तो मानव जीवन शीघ्र सुधर सकता है।

(१९) तुम दूसरों को सच बोलने और भले बनने की शिक्षा मत दो किन्तु स्वयं भले और सच्चे बनकर उनके सामने अपना उदाहरण पेश करो ताकि लोग तुम्हारी नकल करें। शिक्षा देने से उदाहरण बहुत लाभदायक सिद्ध होता है।

(२०) आज का काम कल पर कभी न टालो। यह आदत जीवन को खराब और निकम्मा बना देगी। जीवन का एक-एक क्षण कीमती है। कहावत है कि जो समय बीत गया वह फिर हाथ नहीं आ सकता।

(२१) जिस बात को तुम स्वयं अपने लिये पसन्द नहीं करते उसे दूसरों पर न रक्खो।

(२२) भले की संगत से यश और बुरे की संगत से अपयश मिलता है। इसलिये विवेक से काम लेने की बड़ी आवश्यकता है। जैसे किसी अत्तार के पास बैठोगे तो इत्र की सुगन्ध तुम्हें अवश्य मिलेगी और दुर्गन्ध में जाओगे तो दुर्गन्ध से दिमाग परेशान हो जायगा।

(२३) सच्चा आनन्द केवल उसको मिलता है जो हर स्थिति में प्रसन्न रहता है।

(२४) दुनियां का कोई धर्म बुरा नहीं है। सब में अच्छी-अच्छी बातों की शिक्षा मौजूद है। केवल संकीर्ण दृष्टि, संकीर्ण हृदय और संकीर्ण विचार से किसी को बुरा भला मत कहो। हर धर्म में सिद्ध और महात्मा हुये हैं।

(२५) किसी धर्म के पूर्वज या महापुरुष का नाम असभ्यपने से न लो। जो पूर्वजों का नाम सम्मान के साथ नहीं लेता उसे कोई अच्छा नहीं समझता।

(२६) पुस्तकें कम पढ़ो मगर सोच विचार से अधिक काम लो। जो बात लाभदायक मिले उसे जीवन का अंग बनाने की कोशिश करो।

(२७) जो अपने बड़ों और पूर्वजों के सम्मान का ध्यान नहीं रखता वह वास्तव में अपनी संतान को भी शिक्षा दे रहा है कि वह भी उसकी

(२८) बुराई से हमेशा बचते रहो। यह कभी न सोचो कि छोटी बुराई से परिणाम कुछ नहीं होगा या बहुत कम होगा। तालाब में एक कंकड़ी डालो। घेरा बनना शुरू होगा और जब तक वह घेरा किनारों को न छूलेगा तब तक बन्द नहीं होगा। इसी तरह छोटे से छोटे कर्म का परिणाम भी कुदरत में बड़ा होता रहता है।

(२९) शुद्ध हृदय बनने के लिये सबसे आवश्यक बात यह है कि कमाई हक हलाल की हो। पसीने की कमाई में विशेष बरकत होती है। इसका अनुमान केवल वही लोग लगा सकते हैं जो इस सिद्धान्त का पालन करते हैं।

(३०) किसी से मांगना अत्यन्त बुरा है। जो व्यक्ति एक बार भी ऐसा करेगा वह सिद्धान्त से गिर जायगा। एक बार का ऐसा कार्य आदत के रूप में बदलना शुरू होगा और आत्माभिमान ऐसे लोगों से कोसों दूर रहेगा।

(३१) मांगने के विषय में तो संत यहाँ तक कहते हैं कि ईश्वर के सामने भी हाथ न फैलाओ। जब ईश्वर ने तुम्हें हाथ पाँव विवेक और बुद्धि दी है तो इनसे काम लो। अपनी आवश्यकतायें पूरी करो और यथाशक्ति दूसरों की सहायता का भी ध्यान रक्खो।

(३२] लोगों का यह ख्याल गलत है कि गृहस्थ आश्रम में भजन भाव या मालिक की भक्ति सम्भव नहीं। यह चारों से बढ़कर है। गृहस्थ में रहकर मनुष्य हक हलाल की कमाई करके स्वयं खा सकता है। अपने बच्चों का पालन कर सकता है और अतिथि सत्कार भी अपनी स्थिति के अनुसार कर सकता है लेकिन जो स्वयं ही रोटियों का मुहताज है वह मालिक की क्या याद करेगा।

(३३) जितने संत महात्मा हुये हैं उनमें से अधिकतर गृहस्थी ही थे। कबीर साहब, नानक साहब, उनके उत्तराधिकारी, राधास्वामी दयाल, परम-संत हुज़ूर महाराज ने इसी आश्रम को श्रेष्ठ पाया।

(३४) संत साक्षात् दया के रूप होते हैं। यह जीवों को बड़े प्रेम और दया भाव से चिताते रहते हैं।

(३५) जहाँ दुनियां में दिन रात कारबार करते हो वहाँ तुम्हें यह भी हिदायत दी जाती है कि संतों की शरण में आकर अपने जीवन की गढ़त में लग जाओ ताकि तुम दुनियां के साथ-साथ परलोक भी बना सको। संतों की शरण किसी भाग्यशाली को मिलती है। इस अवसर से जो चूके और बाजी हारी।

प्रवचन

परमसंत परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर २९—१०—७२)

करो सत्संग सतगुरु का, भेद घर का वहाँ पाओ ।
प्यार परतीत चरनन में, दीन दिल सरन में आओ ॥
समझ कर जगत में बरतो, फँसो नहीं जाल में उसके ।
रहो होशियार इन्द्रिन से, भोग संग धोका मत खाओ ॥
शब्द का भेद ले गुरु से, करो अभ्यास तुम निस दिन ।
गुनावन जगत की तजकर, चित से ध्यान धुन लाओ ॥
जगत से रोक मन घट में, ध्यान गुरु रूप का धारो ।
सुमिर राधास्वामी नाम हरदम, गुरु गुन नित्त तुम गाओ ॥
सुरत मन तान गगना में, बजे जहां शंख और घन्टा ।
सुनो फिर शब्द ओंकारा, सुन्न चढ़ मानसर न्हाओ ॥
भंवर गढ़ जा सुनो बानी, सत्तपुर जाय हुलसानी ।
अलख और अगम के पारा, अनामी धाम चढ़ जाओ ॥
मिली राधास्वामी से प्यारी सराहत भाग निज अपना ।
भटक में जन्म बहु बीते, पड़ा मेरा ऐसा अब दावो ॥

बुढ़ापा आ गया । पेशाब की तकलीफ है । दिमागी और शारीरिक कमजोरी आगई है । पिछली आयु में मुझे यह सोचने का हक नहीं है कि ऐ मेरे मन ! ऐ मेरी आत्मा ! तूने जीवन में क्या किया ? यह बाणी जो पढ़ी गई है यह राय सालिगराम साहब की है जो मेरे सतगुरु दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी के गुरु थे । इन बाणियों के आसरे चला हुआ आ रहा हूँ । विश्वास हो गया है कि आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों या महिने दो महिने या साल दो साल के बाद कूंच करना है । अपने आपमे

में नहीं है। आप लोग आ जाते हैं। आपके द्वारा मुझे अपने कर्म काटने का अवसर मिलता रहता है।

भारतवर्ष में ईश्वर या खुदा के नाम पर मानव जाति बटी हुई है। मालिक यदि कोई है या उसकी कोई अभिव्यक्ति है तो वह प्रकाश और शब्द है। प्रकाश से सारी रचना होती है। प्रकाश जब होगा सूर्य से होगा। किसी शक्ति से होगा। इस सृष्टि की अर्थात् स्थूल प्रकृति की उत्पत्ति हमारे इस सूर्य से होती है। मन को बनाने वाला सोहंगपुरुष हमारा सूर्य है और हमारी आत्मा को बनाने वाला हमारा सूर्य सतलोक है। यदि कोई उस मालिक को मिलना चाहता है तो कहे जाता हूँ कि वह मालिक शब्द स्वरूप और प्रकाशस्वरूप ही नहीं बल्कि इससे भी परे है। वह अनामी है। वहाँ तक अभी मेरी पहुँच पूर्ण रूप से नहीं है। जब से शारीरिक रोग हुआ है तब से गिरावट आती रहती है। अनामी धाम का मुझे अनुभव तो है मगर उसका मुझे सार नहीं मिलता। स्थायी मिलाप नहीं मिलता। शरीर छूटने के बाद क्या होगा, पता नहीं। आप लोग आये हैं बाणी को ध्यान से सुनो और सत्संग में बैठकर भेद लो।

मैंने ३०—३५ वर्ष से संसार को भेद, असलियत ही तो बताई है। यह तो मैं इन्कार नहीं करता हूँ कि मैं न किसी को बेटा दे सकता हूँ न धन दे सकता हूँ, न किसी के रोग को ठीक कर सकता हूँ। इसमें संदेह नहीं कि मैं शुभ भावना देता हूँ। चूंकि ख्याल में शक्ति है इसलिये यह हो सकता है कि मेरी शुभ भावना काम करती हो और दूसरों पर प्रभाव करती हो। परन्तु कई आदमियों पर मेरी शुभ भावनाओं ने भी कोई काम नहीं किया इसलिये मैं इस परिणाम पर आया हूँ कि शुभ भावना भी वहाँ काम करती है जहाँ शुभ भावना लेने वाले पात्र (Rocepient) हो। जहाँ किसी को प्रबल जिज्ञासा हो और चाह हो मगर हमारी चाह बदलती रहती है। आज एक चाह है तो कल दूसरी चाह है। चूंकि हम चाह बदलते रहते हैं इसलिये हमारी चाह पूर्ण नहीं होती। यह मेरा अनुभव है।

।। मनुष्य बनो ।।

ऐ दाता ! तेरी शरण में आया हूँ । आयु बीत गई । आपने काम दिया था । मैंने कर दिया । मैंने अपने आपको संत सतगुरु वक्त कहा है । मेरा अहंकार नहीं है । सतगुरु है सच्चा ज्ञान । यह सच्चा ज्ञान मैं संसार को दे रहा हूँ । केवल जीवों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये मैंने अपने आपको संत सतगुरु वक्त कहा है ।

प्यार प्रतीत चरनन में, दीन दिल शरण में धाओ ।

दीन होना अत्यन्त आवश्यक है । जब तक मनुष्य में दीनता नहीं आती तब तक उसे कुछ नहीं मिलता ।

समझ कर जगत में बरतो, फंसो नहिं जाल में उसके ।।

हर एक आदमी को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है । मुझे पेशाब की तकलीफ है । मर्दमी शक्ति के कमजोर होने से ग्लान्डस बढ़ जाते हैं और पेशाब की तकलीफ हो जाती है । अधिक विषय विकार के जीवन से मर्दुमी शक्ति कमजोर हो जाती है । छोटी आयु में मेरा विवाह हो गया । साढ़े पन्द्रह वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन में पड़ गया । यद्यपि मैं इससे जल्दी ही बच गया मगर उसका यह प्रभाव हुआ कि मुझे अब इस आयु में पेशाब का कष्ट है । इसलिये मैं युवा बच्चों को कहना चाहता हूँ कि अपने ब्रह्मचर्य को नष्ट मत करो और बिषय विकार का जीवन कम करो । जो युवक युवा होने से पहिले ही अपने ब्रह्मचर्य को नष्ट कर देते हैं या अधिक विषय भोगते हैं उनको शारीरिक रोग और शारीरिक दुख और मानसिक बेचैनी आना आवश्यक है । कोई उसको रोक नहीं सकता । मैं तो फिर भी बच गया । २७–२८ वर्ष बचा रहा मगर बचपन के विवाह का प्रभाव फिर भी मौजूद है । गृहस्थी हो, संत हो, परमसंत हो, चाहे कोई भी हो, यदि उसका शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य स्थित नहीं रहा, तो उसको पेशाब का रोग हो ही जायगा । इसलिये जहाँ तक हो सके, इसमें फंसने से बचो । जो किया हुआ है वह तो भोगना ही पड़ेगा ।

यह व्यक्ति (श्यामनरायन व्यास) मेरी बीवारी को सुनकर उज्जेन से आया है और मेरे लिये एक दवा पाँव पर मलने के लिये लाया है । इसने

बताया है कि पुराणों में एक कथा आती है कि गणेश जी को पेशाब का रोग हो गया। जब पार्वती जी को पता लगा तो उन्होंने शिव जी से कहा कि महाराज ! इसका इलाज बताओ और यह भी बताओ कि इसको यह रोग क्यों हुआ ? शिव जी ने कहा कि इसको इस रोग का होना आवश्यक था क्योंकि इसने ऋद्धि सिद्धि बहुत भोगी है। फिर उन्होंने किसी ऋषि का नाम बताया कि उसके पास जाओ वह पांव पर मलने की दवा देगा जिससे इसका रोग दूर हो जायगा।

अब सोचो कि स्त्री के साथ विषय भोगना ही केवल भोग नहीं है। दुनियां में कई प्रकार के भोग हैं। जो लोग ऋद्धि सिद्धि में पड़ जाते हैं वह भी भोग है जिस प्रकार भोग वासना के प्रभाव से हम अपने वीर्य को नष्ट करते हैं, ऐसे ही जो आदमी ऋद्धि सिद्धि में फँस जाते हैं वह भी कमजोरी और बीमारी का शिकार होते हैं। साँप को पकड़ने वाला साधारणतया सांप के काटने ही से मरता है। चूंकि ऋद्धि सिद्धि में फँसे हुये आदमी दुनियां में फँसे हुये होते हैं इसीलिये शायद संतों को अन्तिम आयु में कष्ट होता हो।

रहो होशियार इन्द्रियन से, भोग संग धोका मत खाओ ।।

आजकल तो दुनियां में ऐसा प्रोपेगंडा करना वाले महात्मा भी है जो यह कहते हैं कि इन्द्रियों को बेशक वश में मत करो, शराब पीओ, माँस खाओ, चाहे जप न करो मगर नाम लेलो। तुम्हारा बेड़ा गुरु पार कर देगा। यह दुनियाँ को धोका दिया जा रहा है। ऐसे महात्माओं ने संसार को गलत शिक्षा देकर और अपने पीछे लगाकर अपनी जायदादें बनाई हैं। मैं किसी समय दर्दे दिल से ऐसी बात कह देता हूँ मगर दुनियां के अज्ञानी इसको बुरा समझते हैं। यह नहीं कि मैं ऐसी आवाज देकर अपने आपको पापी बना रहा हूं या मैं ठीक कह रहा हूँ मगर मैं क्या करूँ मेरे जीवन का अनुभव कहता है कि जब तक कोई आदमी मन को वश में नहीं करेगा, उसको शान्ति नहीं मिल सकती चाहे वह लाख कोशिश क्यों न करे। यह है गुर।

भोग कई प्रकार के हैं। केवल काम भोग ही भोग नहीं है। जिभ्या का स्वाद भी एक भोग है। यदि जिभ्या के स्वाद के लिये अधिक खा जाओगे तो रोगी हो जाओगे। कहने का अभिप्राय यह है कि यथायोग्य व्यवहार करो।

ड्यूटी और वस्तु है और भोग और वस्तु है। हेरा फेरी और बात है और रुपया कमाना और बात है। यदि धोके से रुपया कमाते हो यह महा पाप है और अपराध है। यदि संतान पैदा करने के ख्याल से भोग करते हो तो वह भोग सुखदाई है और यदि स्वाद के लिये भोग करते हो तो यह दुखदाई होगा। यह है भेद। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को आज तक किसी ने मारा नहीं और न कोई मार ही सकता है। जब तक शरीर है इसके बिना गुजारा नहीं। इसलिये इनका यथायोग्य व्यवहार करो मगर इनमें फँसो नहीं। अनुचित ढंग से रुपया मत कमाओ। अपने स्वाद के लिये मत खाओ। खाने के लिये मत जीयो किन्तु जीने के लिये खाओ।

शब्द का भेद ले गुरु से, करो अभ्यास तुम निसदिन।

मैं कभी-कभी सोचा करता हूँ कि शब्द का अभ्यास क्यों आवश्यक है। अब समझ आईकि प्रकाश का काम फैलना है जैसे तुम बत्ती जलाओ तो प्रकाश बाहर कितनी ही दूर चला जाता है। जो आदमी प्रकाश का साधन करता है, हो सकता है कि वह फिर दुबारा जन्म ले। यह संतों की थ्योरी है। मैं नहीं कह सकता कि थ्योरी बिल्कुल ठीक है या गलत है। यह तो मेरे जीवन का परिणाम ही बतायेगा। मेरी यह इच्छा है कि मरने के बाद संसार को बता सकूं कि मेरा क्या परिणाम हुआ। मगर क्या परिणाम होगा ? मिट्टी मिट्टी में मिल जायेगी। पानी पानी में मिल जायगा, वायु वायु में और ज्योति ज्योति में समा जायगी। मेरी समझ में यह आता है कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ, जो प्रकृति के मेल से शरीर बन गया। इसमें चेतनता आगई जैसे दही और गोबर के मेल से बिच्छू पैदा हो जाता है, ऐसे ही प्रकृति के मेल से यह शरीर बन जाता है। कहीं स्थूल शरीर है कहीं प्रकाश-

वान शरीर है, कहीं गंधर्व हैं और कहीं देवता हैं। मैं यह समझता हूँ कि जीवन है—

लब खुले और बन्द हुये, यह राजे जिन्दगानी है।

मालिक की मौज से यह केन्द्र बना। उसकी मौज से खेला और उसकी मौज से टूट जाना है। यह न पहिले था और न आगे रहेगा। मुझे तो इस बात से शान्ति मिलती है कि वह एक समुद्र है उसमें बुलबुले उठते हैं और उसी में मिल जाते हैं।

गई नोन की पोटली, थाह समुन्दर लेन।

स्वामी जी की बाणी मेरे इस अनुभव का प्रमाण हैं।

सुरत मन तान गगना में, बजे जहाँ शंख और घंटा।

घंटा शंख और रारंग सारंग क्यों बजता है? ओ३म की धुनि क्यों होती है? मुरली और बीन क्यों बजती है? इन सबकी व्याख्या मैंने अपने अनुभव के आधार पर 'सार का सार' नामी पुस्तक में और 'पाँच नाम की व्याख्या' नामी पुस्तक में की है। मेरी समझ में यह आया है कि हमारी स्टेज अनामी धाम है जहाँ न रूप है न रंग है, न प्रकाश है न शब्द है और न गुरु है न चेला है। तो फिर मेरा अस्तित्व पहिले भी अनामी था और बाद में भी अनामी हो जायगा। तब ही तो मैं कहा करता हूँ कि मैं अनामी धाम से आया हूँ। मैं ही नहीं तुम सब अनामी धाम से आये हो। बाणी पूरे सारांश को प्रगट नहीं करती। चूंकि ज्ञान नहीं मिला और मन चंचल होने के कारण ठहरता नहीं है इसलिये तुमको विश्वास नहीं होता कि तुम अनामी धाम से आये हो। जब अभ्यास के स्थानों से जाते हुये शब्द से जाओगे और वहां उस वस्तु की खोज करोगे जो शब्द को सुनती है तो फिर वहाँ क्या होगा? सारे खेल समाप्त हो जायेंगे। वह है अनामी धाम। उसके अनुभव के बाद कुल प्रश्नोत्तर समाप्त हो जाते हैं और सब भ्रम दूर हो जाते हैं। मगर यह विवेक और अनुभव बुद्धि के ढंग से समाप्त हो जाते हैं क्रियात्मक रूप से नहीं। अब मुझे पेशाब का कष्ट है। कष्ट के समय मेरा ज्ञान मदद नहीं करता जब तक कि मैं अपनी सुरत को ऊपर न ले जाऊँ। इस-

लिये जब तक शरीर है ज्ञान प्राप्त करो, साधन करो और एक दूसरे की सहायता करो। अब मुझे शारीरिक कष्ट हैं। इसको दवा से आराम होगा। यदि सुरत को ऊपर ले जाऊं तो कष्ट से बच जाऊंगा मगर कब तक ? हमेशा तो ऊपर नहीं रह सकता इसलिये जब तक शरीर में हूँ इसके लिये दवा की आवश्यकता है।

दातादयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल देना। इसीलिये मैंने 'इन्सान बनो' की आवाज उठाई है कि किसी निर्धन की सहायता करो, भूके को रोटी और नंगे को कपड़ा दो और किसी रोगी को दवा दो ताकि तुमको सुख और शान्ति मिले। मैं चाहता हूँ कि जो व्यक्ति मेरी विचारधारा से सहमत हों वह मेरे जीवन में या मेरे मरने के बाद मानवता मन्दिर की सहायता करते रहें ताकि मेरी विचारधारा संसार में फैलती रहे। यह मेरे जीवन का अनुभव है।

विषय विकार कम करो। शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को स्थित रक्खो। किसी को धोका मत दो और खूब कमाओ। इसके बिना संसार का काम नहीं चलता मगर धोखे से मत कमाओ। थोड़ा-थोड़ा साधन अवश्य करो ताकि तुम्हारा मन एकाग्र हो जाये। जब तक अन्तर में तुम्हारा मन एकाग्र नहीं होगा तब तक न तो जीवन का ही अनुभव होगा और न तुमको शान्ति मिलेगी। यह जितनी श्रेणियाँ हैं यह सब हमारी चेतन्यता की अवस्थायें हैं। कोई जाग्रत अवस्था है कोई स्वप्न और कोई सुषुप्ति अवस्था है। कोई तुरिया और कोई तुरियातीत अवस्था है। अभ्यास करो मगर किसी पूर्ण गुरु की आज्ञा में रहकर करो अन्यथा पागल हो जाओगे। अभ्यास में जो मूर्ति प्रगट होती है उसके साथ बातचीत मत करो। व्यास का एक सत्संगी जो पहिले सूबेदार था, पागल हो गया और अपने पागलपन में घूमता रहता था। उसकी स्त्री उसके पीछे-पीछे फिरा करती थी। एक बार वह मेरे पास आया और बड़े जोर से कहने लगा कि बाबा सावनसिंह जी आये और कहने लगे कि बाबा फकीर पूर्ण गुरु है। उसके पास जाओ। यह है क्या ? जो कुछ किसी के अन्तर विचार होता है, वही बाहर में प्रगट होता

है। मनुष्य भ्रम और अज्ञान वश उसको सच मानता है। अब यह आदमी (श्यामनरायन व्यास) उज्जैन से आया है और कहता है कि बाबा जी ! आप मेरे अन्तर आये और कहा कि मैं बीमार हूँ। अपनी जगह पर यह भी सच्चा है क्योंकि इसके अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ मगर मैं भी अपनी जगह पर सच्चा हूँ क्योंकि मैं इसके अन्तर नहीं गया। इसलिये यदि मैं संसार को सचाई वर्णन नहीं करता तो दुनियां पागल हो जायगी। कोई मेरे पीछे फिरेगा। कोई व्यास वालों के पीछे फिरेगा ! कोई आगरा वालों के पीछे फिरेगा। कोई औरों के पीछे फिरेगा। इसलिये बाहर के गुरु से भेद लेकर शब्द और प्रकाश को पकड़ो।

स्वामी जी महाराज ने सचाई वर्णन की और भेद दिया। इसलिये हुजूर महाराज ने उनका गुणगान किया और इतनी सेवा की कि शायद ही किसी चेले ने अपने गुरु की इतनी सेवा की हो। मैं किसी को धोका नहीं देता किन्तु सचाई वर्णन करता हूँ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न कोई और महात्मा जाता है। जो ऐसा कहते हैं कि मैं अन्तर जाता हूँ वह महात्मा नहीं हैं। मैंने जीवन में किसी के साथ कोई ठगी नहीं की है और न किसी पर कोई अहसान किया है। आप लोगों का अहसान है कि आपकी बदौलत मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ अन्यथा पता नहीं कब तक भटकता रहता। किसी गुरु ने या किसी पंथ ने स्पष्ट रूप से यह भेद नहीं बताया। यदि बताया तो संकेत में बताया। स्पष्ट वर्णन से डेरा या आश्रम नहीं बनते। अब मैं किसी धर्म यो पंथ का अनुयायी नहीं हूँ। मानवता मेरा धर्म है और पंथ मेरा रास्ता है।

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर १६—१०—७२)

मेरे चंचल मनुआ काल से डर ॥
आज कहे मैं कल भजूंगा, काल की गति नहिं जाने ।
आज कल क्या करता है तू, काल लगा नियराने ॥
क्या जाने क्या पल में होगा, काल है कठिन कराला ।
काल भयानक फनधर भाई, काल नाग है काला ॥
जो कहता है अब कर प्यारे, औसर मिला सुहाना ।
आज का काम काल पर क्यों तू, छोड़ हुआ दीवाना ॥
खेल कूद में विषय भोग में, आयु सकल सराई ।
वृद्ध अवस्था देह शिथिल भई, अब कुछ करले कमाई ॥
आज कल में बिगड़ेगा तन, साँस दुधारा जारी ।
काल का त्याग बहाना छूटा, कर चलने की त्यारी ॥
संगी साथी नहीं हैं तेरे, मात पिता सुत भाई ।
अपने स्वारथ बन्ध बंधाने, साथ नहीं कोई जाई ॥
बादर की छाई जग लीला, विनस जाय पल माहीं ।
राधास्वामी की कर आसा, और की आशा नाहीं ॥

मैं अपने आपको ही सत्संग कराता हूँ । मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि तू गुरु बनके बैठा है और लोगों से मत्थे टिकवाता है । यह तो कुदरत ने मेरी सहायता की है जो तुमने मानवता मन्दिर बनवा लिया । तेरी अपनी क्या अवस्था है । क्या तू काल से डरता है ? क्या तूने अपना जन्म बना लिया है ? पहिले तो मन की चंचलता का पता नहीं लगता था । किसी को अच्छा किसी को बुरा कह देता । ऐसी-ऐसी बातों को मैं मन की चंचलता समझता था । अब मैं चंचलता को कुछ और समझता हूँ और इस

गुरु पद पर आने के बाद मुझे समझ आई कि गुरु का रूप शब्द है और उसके चरण प्रकाश हैं। जब मेरी सुरत शब्द और प्रकाश में जाती है तो किसी समय तो ठहर जाती है और कभी वहां से उत्थान हो जाता है। उत्थान क्यों होता है ? कभी कोई ज्ञान ध्यान का विचार, कभी किसी गुत्थी के हल करने का ख्याल या कभी कोई और ख्याल सामने आ जाता है और रोकने पर भी नहीं रुकता और फिर आ जाता है। यह है मन की चंचलता। इसके दूर करने की कोशिश करता रहता हूँ। अब पेशाब की तकलीफ है। कई बार यह भी रुकावट बन जाती है। दातादयाल जी का जो शब्द है मैं इसको अपने नाम समझता हूँ और तुम अपने नाम समझो।

मेरे चंचल मनुआ काल से डर।

पहिले तो हम काल और समझते थे। अब समझ में आया कि हम यह जितनी बातें करते हैं यह सब काल में हैं। मैं सत्संग कराता हूँ। यह भी काल में है। लेख लिखता हूँ यह भी काल का चक्र है। अब समझ में आया कि यह तो चार दिन का जीवन है। एक समय आयेगा न यह लेख रहेंगे और न यह विचार रहेंगे और न यह शरीर रहेगा। क्या होगा ? पता नहीं। अनुभव कहता है कि यदि शरीर के त्याग के समय कोई भाव या विचार या दृश्य न आया और केवल शब्द और प्रकाश ही रह गया तो फिर इस चोले में नहीं आऊंगा अर्थात् आवागवन समाप्त हो जायगा। यदि यह फुरनायें शेष रहीं तो फिर शायद चोला लेना पड़े। आगे मालिक की मौज। जीवन में बहुत कोशिश की। अब बुढ़ापा आ गया। अपनी कमजोरियां और असफलतायें सामने आती हैं।

आज कहे मैं काल भजूंगा, काल की गति नहिं जानी।
आज काल क्या करता है तू, काल लगा नियराने ॥

हर एक महापुरुष ने अपने भाव से अपनी बाणी लिखी है। मैं तो यह समझता हूँ कि यहां से सबने चले जाना है। अब बुढ़ापा आ गया। समय निकट है। नैय्यर साहब ! आपका समय भी निकट है। मैं यह कोशिश करता रहता हूँ कि अपनी सुरत को शब्द और प्रकाश में रक्खूँ मगर जिनको

इतनी ऊँची अवस्था नहीं है उनको चाहिये कि वह गुरु स्वरूप का ध्यान करें लेकिन उस स्वरूप को फकीरचन्द या कोई और गुरु न समझें किन्तु उसको मालिके कुल समझें। अनुभव कहता है कि यदि अन्त समय पर शब्द और प्रकाश न भी आये तो हो सकता है कि वह आवागवन से बच जाये।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

इसलिये ऐसा ध्यान करना चाहिये। जब मेरी सुरत ऊपर नहीं जाती है तो मैं भी दातादयाल (महर्षि शिव) के रूप का ध्यान करता हूँ मगर इस रूप को मालिक समझता हूँ। अब भी वह सुन्दर मस्तक और सुन्दर मुखड़ा मेरे सामने है। मैं कई बार सोचता हूँ कि क्या यह चक्र आवश्यक है? रात को मैं कभी तो शब्द और प्रकाश में चला जाता हूँ और कभी स्वप्न आने शुरू हो जाते हैं। जो जो संस्कार, विचार और भाव सुने हुये, पढ़े हुये या पिछले जन्म के हमारे दिमाग पर पड़े हुये होते हैं वे ही रूप बना-बनाकर सामने आते हैं। जब शरीर छूटता है तो चूंकि वह जीवन में काल से डरा नहीं है इसलिये अन्त समय पर जैसे-जैसे भाव विचार और नक्शे उसके सामने आयेंगे उसका सूक्ष्म शरीर उन्हीं में चलता रहेगा और उसका आवागवन समाप्त नहीं होगा, क्योंकि जिस तरह हम स्वप्न देखते हैं वैसे ही यह सूक्ष्म शरीर भी लम्बा स्वप्न देखता है। यही शास्त्र कहते हैं। इसलिये संत कहते हैं कि भाई इस मन से डर।

क्या जाने क्या पल में होगा, काल है कठिन कराला।
काल भयानक फनधर भाई, काल नाग है काला॥

मन भी काल है और मौज भी है। क्या पता किस समय आ जाये।

जो करना है अब कर प्यारे, अवसर मिला सुहाना।
आज का काम कल पर क्यों तू, छोड़ हुआ दीवाना॥

अपने आपको समझता हूँ कि क्या लिया मानवता मन्दिर बना के। एक मुसीबत लेली। इसकी देखभाल का ख्याल रहता है मगर पिछले कर्म अवश्य भोगने पड़ेंगे।

मेरे प्यारे भाई ले गुरु की शरणाई ॥

पहिले तो बाहर के गुरु की शरणाई होती है। फिर अन्तर के शब्द गुरु की शरणाई होती है। अन्तर का गुरु है अनहद शब्द या सतनाम और उसके चरण हैं प्रकाश।

भरम फाँस में मन उरझाना, नहिं सूझे कोई अपना व बिराना।
भूला मोह मया मद माना, समझ न अब तक आई॥

किसी ने अपने बेटों के लिये जायदाद बनादी और मैंने सत्संगियों के लिये मानवता मन्दिर बना दिया। इसलिये क्या अन्तर है मुझ में और गृहस्थियों में ? लेकिन यह सब प्रालब्ध कर्मों के अनुसार होता है। कोई ब प बनके लेता है, कोई बेटा बनके लेता है, कोई भाई बनके और कोई बहिन बनके, कोई गुरु बनके और कोई चेला बनके।

गुरु हैं तेरे तू है गुरु का, तू बालक गुरु पिता और माता।
क्यों नहिं चरन कमल रहे राता, कैसे कहूँ समझाई॥

दुनियां कहती है कि हम फकीरचन्द के या बाबा सावनसिंह जी के बेटे हैं या अपने-अपने गुरुओं के पुत्र हैं। दीवानो ! तुम्हारी आत्मा प्रकाश स्वरूप है और पारब्रह्म की अंश है और वही तुम्हारी रक्षक है। बाहर के गुरु ने तुमको सच्ची समझ और सच्चा ज्ञान देना है। इस शब्द के लेखक (दातादयाल) तो स्वयं गुरु हैं। वह यह तो नहीं कहते कि तुम मेरी शरण में आओ। वह तो कहते हैं कि "ले गुरु की शरणाई"। कौनसा गुरु ? शब्द और जिसके चरण प्रकाश हैं। बाहर के गुरु ने तुमको चेतावनी देनी है ताकि तुम काल के चक्र से डरकर अपने आपको शब्द और प्रकाश में ले जाने का साधन करो और फिर इस चक्र में न आओ क्योंकि यहाँ तो दुख ही दुख है। यहाँ सबने दुख उठाया। संतों ने भी यहाँ बड़े दुख उठाये। जो भी यहाँ आता है वह जीव है और अपने कर्म का फल भोगता है।

हर पल सुमरि गुरु का नामा, चित पावे तेरा विसरामा।
त्याग मान अभिमान के कामा, चरन शरण हितलाई॥

संत जीव को बाहरमुखी से अन्तरमुखी बनाते हैं लेकिन सत्संगी क्या करते हैं। बजाय गुरु की बात समझने के गुरु की प्रशंसा ही करते हैं। यह

सब मन मत है और यह मन के खेल हैं। असली गुरु हर एक के अन्तर में शब्द है और उनके चरण प्रकाश हैं।

तेरा काम मौज से होगा, मौज आधीन भोग और जोगा।
मौज को छोड़ सहे रोग सोगा, मौज में तेरी भलाई॥

रोग सोग, भोग जोग आदि यह सब प्रकृति के खेल हैं और हर एक आदमी अपना-अपना कर्म भोगता है। ऐसा समझकर इस बुढ़ापे में मुझे शान्ति मिलती हैं। यदि आज मुझे यह ज्ञान होता कि इन महात्माओं ने इतने कष्ट क्यों उठाये हैं तो शायद आज मैं अपने आपको कोसता। सत्संग इसलिये कराया जाता है कि आदमी को समझ आ जाय और उसको शान्ति मिले। यदि आप गुरु के रूप को समझ जाओ और शब्द प्रकाश का साधन करते रहो तो तुम पार हो सकते हो। उसकी मौज में रहो। राजी बरजा! इसी में भलाई है।

तू रनवीर, धीर रणसूरा, तेरा काम करे गुरु पूरा॥

जो आदमी अपने अन्तर में वृति जमाता है वह बहादुर है। लड़ाई में सूरमा भी अपनी वृति को जमाकर और लड़कर मर जाता है। अपने अन्तर में वृति जमाना, प्रकाश को देखना और शब्द को सुनना वीरों का काम है। मैं यद्यपि इतना अभ्यासी हूँ मगर फिर भी इस शारीरिक रोग के कारण मुझ में भी गिरावट आती रहती है। मैं पाखंड जगाना नहीं चाहता। कोई दूसरा आदमी बताये या न बताये मगर मैं सचाई वर्णन कर रहा हूँ कि शारीरिक कष्ट के समय मुझ में गिरावट आ जाती है।

तुम्हारा काम गुरु पूरा करेगा। क्या अभिप्राय? क्या फकीरचन्द या कोई और गुरु करेगा? जिसकी सुरत प्रकाश और शब्द में चली जाती है उसको पूर्ण अनुभव और ज्ञान हो जाता है। यह है काम का पूरा होना।

मैं कई बार सोचता हूँ कि फकीरचन्द! अब अन्तिम आयु है। मौज पर रह और शब्द और प्रकाश को पकड़ ताकि अन्त समय प्रकाश और शब्द आ जांयें। पता नहीं आयेंगे या नहीं आयेंगे। प्रयत्न करना मेरा कर्त्तव्य

है। सफल हूँगा या नहीं यह उसके हाथ में है। इसलिये रात दिन सुबह शाम चलते फिरते सोचता रहता हूँ कि अब चलना है।

हो रह चरन कमल की धूरा, राधास्वामी के गुन गाई ॥

किस के चरण कमल की धूल ? कई आदमी मेरे पांव को धोकर पीना चाहते हैं। उनको इतनी समझ नहीं कि शायद मेरे पाँव में कोई रोग हो और उसके कीटाणु उनको बीमार करदें। यह अज्ञान की भक्ति है। शुरू शुरू में ऐसा होता ही है। हमने भी ऐसा किया हुआ है। यदि सच्चे प्रेम में कोई ऐसा करता भी है तो उस पर प्रभाव नहीं होता। मीराबाई का उदाहरण आपके सामने है। उसने प्रेम में आकर विष के प्याले को अमृत समझकर पी लिया था। उसको कुछ नहीं हुआ। क्यों ? उसमें प्रेम और विश्वास की शक्ति थी लेकिन हम लोग तो नकल करते हैं। मैं एक बार मध्य प्रदेश में नहा रहा था तो लोग उस पानी को पीने लग गये। मैंने इसको बहुत महसूस किया और उनको समझाया कि यह अज्ञान की भक्ति है।

मैं न महात्मा हूँ न संत या परमसन्त हूँ किन्तु आप जैसा एक मनुष्य हूँ जिसने सचाई या मालिक की खोज में अपना सारा जीवन व्यतीत कर दिया।

प्रवचन

परमसंत परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर ३—१२—७२)

गुरू दर्शन मार्ग

गुरु का दरस तू देखरी, तिल आसन मार।

गुरु रूप सुहावन अति लगे, घट भान उजार ।
कमल खिलत सुख पावई, भोंरा कर पियार ॥
गुरु ज्ञान न पाया हे सखी, जिन घर अंधियार ।
पूरा सतगुरु न मिला, भरमत भव जार ॥
मैं तो सतगुरु पाइया, जाऊँ बलिहार ।
ज्यों चकोर चन्दा गहे, रहूँ रूप निहार ॥
सतगुरु शब्द स्वरूप हैं, रहें अर्श मंझार ।
तू भी सुरत स्वरूप हैं, रहे गुरु की लार ॥
नैनन मैं गुरु रूप है, तू नैन उघाड़ ।
श्रवण में गुरु शब्द है, सुन गगन पुकार ॥
राधास्वामी कह रहे, यह मारग सार ।
जो जो मानें भाग से, सो उतरें पार ॥

मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि तूने यह मानवता मन्दिर बनाया या पुस्तकें लिखता है, टेपरैकार्ड कराता है, सत्संग कराता है, 'मनुष्य बनो', 'शिव' और 'दयाल मासिक' पत्र निकालता है, 'प्रदीप' और 'जनता जनार्धन' को पैसा देता है, तुझे क्या पड़ी थी ! मुझे छोटी आयु से मालिक से मिलने की धुनि थी और अब भी है । क्यों था ? तुम लोग तो दुनियां में फंसे हो इसलिये शायद तुम लोगों को यह ख्याल न हो मगर मैं सोचता हूँ कि मेरे माँ बाप मर गये, एक लड़का मर गया, एक लड़की मर गई, मेरी स्त्री चल बसी और नित्यप्रति अपनी आँखों से देखता हूँ कि लोग मर रहे हैं । आखिर हम कहाँ से आये हैं और कहाँ जाना है । जो लोग नित्य मरते हैं यह कहाँ जाते हैं । हमको भी एक दिन मर जाना है ।

तुम लोग अपने भविष्य के लिये हमेशा सोचते रहते हो और अपने बच्चों के लिये कितनी योजनायें (Plans) बनाते हो और गवर्नमेंट भी बहुत कुछ कर रही है लेकिन यह कोई नहीं सोचता कि हमको एक दिन यहां से चले जाना हैं । मैंने सोचा है और अब भी सोचता रहता हूँ । हम कहाँ से आये हैं ? माँ के पेट से । पिता के वीर्य ...

वह भी कहीं से बना है। उसमें जीवन है। वह जीवन क्या है ? मैं उसकी खोज करता था। साइंस के अनुसार वह है ज्योति (Light)। यहाँ सृष्टि में कितने ही बड़े-बड़े लोक हैं। सूर्य की गर्मी इसकी किरणों के द्वारा पृथ्वी पर आती है। मेह पड़ता है तो अनन्त जीव जन्तु यहाँ उत्पन्न हो जाते हैं।

उस मालिक से मिलने के लिये बाहर का गुरु समझ देता है। जब तक किसी को कोई बात बताई या समझाई न जाय, वह समझ नहीं सकता। शुरू-शुरू में छोटे बच्चे को समझ नहीं होती। ज्यों-ज्यों उसको शिक्षा दी जाती है वह समझने और करने लग जाता है। कहते हैं कि अनुभव करने के लिये किसी ने एक छोटे से बच्चे को किसी ऐसी जगह रक्खा कि जहाँ और कोई आदमी उससे मिल न सके। बच्चे की माँ भी उसके सामने बोलती नहीं थी। जब वह बच्चा बड़ा हुआ तो वह बोलता नहीं था। गूंगा ही रह गया। ऐसी घटनायें भी सुनने में आई हैं कि किसी बच्चे को भेड़िया उठाकर जंगल में ले गया और वहाँ जानवरों में ही वह पाला गया जो बच्चा भी जानवरों की तरह चलता था और उनकी तरह ही खाता था।

इसलिये हमको जो वस्तु ज्ञान बुद्धि और विवेक देती है वह है गुरु। गुरु अपार ज्ञान और बुद्धि का एक भंडार है और तत्व है। संतों के मार्ग में अपने घर जाने के लिये जिस बुद्धि और विवेक की आवश्यकता है उसके लिये पूर्ण गुरु चाहिये, जो जीव को असली और सच्ची बात बतादे और उसको अपने घर का मार्ग बतादे। हुजूर महाराज को अपने घर की खोज थी। उनको स्वामी जी महाराज मिल गये और निज घर का रास्ता बता दिया।

हुजूर महाराज ने राधास्वामी मत चलाया। उस पवित्र विभूति ने स्वामी जी महाराज की बड़ी सेवा की। वह गुरु का रूप बताते हैं। मैं मूर्ति का पुजारी था। ईश्वर और परमात्मा को मानता था। मुझ में प्रेम भाव बड़ा था और मालिक के घर की खोज थी। कुदरत मुझे इस खोज के सिलसिले में महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे राधास्वामी मत या संत मत की शिक्षा दी। चूंकि उस समय उस मत की

बाणी से मुझे विरोध था इसलिये मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सचाई से चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। इन बाणियों को पढ़कर मेरे जैसे लाखों आदमी इस गुरुमत में शामिल होगये और गुरुओं के आगे नाक रिगड़ते फिरते हैं और अपना धन दौलत देते फिरते हैं ताकि उनको अपने घर का पता मिल जाय। चूंकि मेरे जिम्मे दातादयाल ने ड्यूटी लगाई थी :—

तू तो अपना नर देही में, घर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी है, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

इसलिये मैं यह काम करता हूँ। आप सब लोग गुरुओं के पास जाते हो। कोई कहीं जाता है कोई कहीं, लेकिन इस गुरु मत के चलाने वाले हुजूर महाराज कहते हैं :—

गुरु का दर्श तू देखरी, तिल आसन मार।

तुम तिल में आसन डारकर गुरु का दर्शन करो। तिल एक स्थान है जो दोनों भोंओं के बीच में है जहाँ मन एकाग्र होकर ऊपर को चलता है। जो आदमी बाहर के गुरु के दर्शन तक ही सीमित है और वह समझता है कि बाहर के गुरु को पैसा देने से या फूल चढ़ाने से, उसका 'मानवता मन्दिर' बना देने से वह आवागवन से बच जायगा, वह भूला हुआ है। चूंकि मेरे जिम्मे निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करने की ड्यूटी है इसलिये मैं उच्च स्वर से कहता हूँ कि मन्दिर बना देने से या केन्द्र बना देने से या डेरा धाम बना देने से तुम अपने घर नहीं जा सकते। इन कामों से तुमको यह लाभ होगा कि तुम प्रेम से जो कुछ दोगे, वह तुमको मिलेगा। भूखे को रोटी, प्यासे को पानी और दुखी की सहायता करना यह पबलिक सर्विस है बशर्ते कि यह पबलिक की भलाई के लिये हो, अपनी सन्तान के लिये न हो। जो आदमी अपने घर जाना चाहता है वह तिल के स्थान पर अपने मन को एकाग्र करे। इसके आगे साधन करे। फिर शब्द और प्रकाश

आयेगा। यही हुजूर महाराज कहते हैं कि तिल में आसन डारकर तुम गुरु के दर्शन करो। उस तिल का नाम तीसरा तिल है। यहाँ पर आसन जमाओ। बाह्य गुरु की जितनी चाहो, सेवा करो, दर्शन करो और रुपया दो लेकिन जब तक तुम अपने अन्तर में नहीं चलोगे, तुम अपने घर नहीं जा सकते।

मेरी यह इच्छा है कि मेरे यह सत्संग आम जनता में पहुँचाये जांयें ताकि दुनियां को असलियत का पता लग जाय। यह शब्द जो पढ़ा गया है यह उस सत्पुरुष का बचन है जिसने यह मत चलाया है। जिसने अपने गुरु का नाम राधास्वामी रक्खा है यद्यपि उनका नाम स्वामी शिवदयाल-सिंह जी था।

गुरु का दर्श तू देखरी, तिल आसन डार।
शब्द गुरु नित सुनोरी, मल वासन जार॥

मल बासन अर्थात् गलत वासनाओं को छोड़कर और तिल में बैठकर अपने अन्तर के गुरु अर्थात् अनहद बाणी को सुनो। इसके सुनने से क्या लाभ होगा ? पहिला लाभ जो मुझे हुआ वह यह है कि मुझे आनन्द प्राप्त हुआ और मेरे अन्तर में प्रेम की भावना पैदा हुई। दूसरा लाभ इसका यह है कि यदि मरते समय शब्द और प्रकाश आ जाये तो बेड़ा पार हो जायेगा। लोग तो कहते हैं कि मन से सहस्रार, ओंकार, रारंगकार, सोहंकार और सत्याकार का जाप करो। यदि मरते समय भी मन से या विचार से यह जाप करते रहोगे या राधास्वामी राधास्वामी, या राम राम या कोई और नाम का जाप करते रहोगे तो तुम अपने घर नहीं जा सकोगे। उसको भी फिर से जन्म लेना पड़ेगा क्योंकि नाम तो यह है नहीं। नाम तो शब्द है. उद्गीत, श्रुति, अनहद, सुल्तानुलजकार है।

मुझे दातादयाल ने मेरे ही कल्याण के लिये यह काम दिया था। वह मुझे बहुत समझाया करते थे लेकिन बात मेरी समझ में नहीं आती थी। मेरा प्रेम उनके शरीर से था। जब मैं उनसे मिलता तो बहुत रोया करता था। एक बार वह मेरे पास गिदड़बाहा में आये। मैंने कहा कि महाराज !

अब आपका शरीर नहीं रहेगा तो उन्होंने कहा कि फकीर ! मेरे कर्म कट गये और तुम्हारे अभी बाकी हैं। नाम देते रहना और सत्संग कराते रहना। मैंने इन्कार किया तो कहने लगे कि फकीर ! तुम्हारे अन्तर अभी कमियाँ हैं। तुम अभी तक इष्ट पद पर नहीं पहुँचे। मेरी आज्ञा मानो। इस काम के करने से तुम इष्ट पद पर पहुंच जाओगे। उस समय मुझे अपनी कमियों का पता नहीं था। मैं तो उनके सुन्दर मुख से प्रेम किया करता था। गुरु पद पर आने के बाद जब मुझे ज्ञान हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है और उनके भिन्न-भिन्न प्रकार के काम करता है मगर मैं नहीं होता और न मुझे कोई पता होता है तो मुझे निश्चय हो गया कि यह जो रूप किसी के अन्तर प्रगट होता है, यह गुरु का रूप नहीं है। यह मन का रूप है। इससे तुम्हारा सांसारिक जीवन अच्छा हो जायगा। तुमको मान आदर मिल जायगा। तुम्हारे अन्तर सिद्धि शक्ति भी आ जायगी लेकिन तुमको आवागवन से छुटकारा नहीं मिल सकता। छुटकारा तब मिलेगा जब तुम शब्द और प्रकाश का साधन करोगे।

जब तिल फटता है तो अन्तर में प्रकाश हो जाता है क्योंकि तुम आत्म-स्वरूप हो और प्रकाश स्वरूप हो। जिस तरह प्रकाश की किरणें वनास्पति में और जीवन में आती हैं यद्यपि तुमको दिखाई नहीं पड़ती, यदि वह न हों तो रचना नहीं होती ऐसे ही हमारे अन्तर में भी प्रकाश है।

उस सत्पुरुष (हुजूर महाराज) ने कितनी सचाई से काम किया है लेकिन अफसोस कि आजकल इस गुरुमत या राधास्वामी मत या संत मत में क्या हो रहा है ! जब एक गुरु मर जाता है तो दूसरा कहता है कि मैं गुरु हूं। लोग पहिले गुरु का ध्यान छोड़कर दूसरे गुरु का ध्यान करने लग जाते हैं। लोग अनसमझ हैं। मेरे जिम्मे ड्यूटी है निबल अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करना। इसलिये मैं यह समझता हूँ कि जिज्ञासुओं को सच्ची शिक्षा मिल जाय तो वह अपना जीवन बना सकते हैं और गलत लूट से बच सकते हैं। लोगों के अन्तर जगह जगह मेरा रूप प्रगट होता है क्योंकि वह मुझ पर विश्वास करते हैं। यदि मैं इस बात को पर्दे में गुप्त रखता

तो मेरा भी बहुत बड़ा डेरा बना हुआ होता लेकिन मैं तो संसार में सचाई की घोषणा करने आया हूं रुपया जमा करने नहीं आया।

कुछ साल हुये मैं चण्डीगढ़ गया। एक जगह ठहरा हुआ था। जब मैं वहाँ से आने लगा तो उसकी स्त्री ने कहा कि बाबा जी! एक दिन और हमारे यहाँ ठहर जाइये। मेरे मुंह से निकल गया कि बेटी! अगले वर्ष तुम्हारे लड़का होगा तब उसकी बधाई देने आऊंगा। उनका मुझ पर विश्वास था। उनके लड़कियाँ ही थीं। लड़का कोई नहीं था। यह बात स्वाभाविक मेरे मुंह से निकल गई थी। अगले वर्ष उनके लड़का पैदा हुआ। कुछ समय बाद मैं फिर चण्डीगढ़ गया। मैंने कहा कि एक लड़का और होगा। बात आई और चली गई। कुछ समय बाद बच्चा पेट में आ गया। उसकी लड़कियाँ जवान थीं। इसलिये उसे लाज लगी और गर्भ गिरा दिया। लेकिन उसके बाद फिर गर्भ होगया और लड़का पैदा हुआ और मैंने उस बच्चे का नाम रक्खा।

ऐसी बातों के कारण लोग मेरे पीछे फिरते हैं। क्या इस लिहाज से मैं गुरु हूँ? जिसका हृदय शुद्ध होता है उसके मुंह से होने वाली बात स्वाभाविक ही निकल जाती है। तुम अपने मन को निर्मल करलो। तुम्हारे मुंह से होने वाली बात निकलेगी। यह विचार की शक्ति है मगर इसमें परमार्थ नहीं है। मेरे जीवन में ऐसी अनेकों घटनायें हुई हैं। मेरी समझ में यह बात आई है कि जो होने वाली बात होती है वही होती है। दूसरी नहीं और अनहोनी हो उसको कोई संत भी नहीं कर सकता।

मामचन्द का एक मित्र त्रिलोकचन्द है। उसके कोई लड़का नहीं था। यह उसकी स्त्री को लेकर मेरे पास आया और कहने लगा कि पिता जी! इसके यहाँ कोई लड़का नहीं है। आप दया करके इसको प्रशाद दे दें ताकि इसके लड़का हो। मैंने कहा कि इसके भाग्य में लड़का नहीं है लेकिन मामचन्द ने हठ की। मैंने ऐसे ही कहा कि इसके लड़का होगा लेकिन तुम्हारा एक लड़का मर जायगा। इसने स्वीकार कर लिया। मैंने कहा कि अपनी स्त्री को मत बताना वर्ना झगड़ा खड़ा हो जायगा। मैंने प्रशाद

दे दिया और कुछ समय के बाद यह स्त्री गर्भवती होगई। उधर उसका लड़का बीमार होगया। उसको १०६ का बुखार हो गया। अब देखो कि होनी होकर रहती है। त्रिलोकचन्द उसके लड़के की खबर लेने आया। मन में तो वह खुश था। फिर वह मेरे पास आया। मुझे उससे शराब की दुर्गन्ध आई। मेरे मन में ख्याल आया कि फकीर! तुमने अपनी विचार शक्ति का प्रयोग किया है और मामचन्द ने एक शराबी की सिफारिश की है। यह उसने ठीक नहीं किया है। दूसरे दिन मामचन्द आ गया। मैंने उससे कहा कि तुमने एक शराबी की शिफारिस की है। यह तुमने अच्छा नहीं किया। जा! तेरा लड़का ठीक हो जायगा और उसकी स्त्री का गर्भपात हो जायगा। मामचन्द ने कहा पिता जी! वह शराबी नहीं है। वह तो एक अफसर के लिये एक बोतल शराब ले जा रहा था। बोतल कोट की जेब में थी। किसी तरह से वह टूट गई और उसके कपड़े शराब से भीग गये थे। इसलिये उसके कपड़ों से शराब की गंध आती होगी। मैंने कहा जो होना था हो गया। मालिक ने मेरी विचार शक्ति की लाज रखली और इसका लड़का राजी हो गया और उस स्त्री का गर्भपात हो गया।

मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ होना होता है वह होके रहता है। इसलिये मैं इन चमत्कारों से दूर रहता हूँ। अब यदि मैं यह कहूँ कि मैंने उसको लड़का दिया या मेरे कहने से उस स्त्री का गर्भपात हो गया या मामचन्द का लड़का बीमार हुआ या राजी हुआ तो यह गलत है। मैं ऐसा गुरु बनने को संसार में नहीं आया हूँ।

यदि कोई यह समझता है कि मेरी शिक्षा सचाई पर है तो उस शिक्षा के प्रचार के लिये जो चाहे मानवता मन्दिर की सेवा करे। मैं किसी को धोखा देना नहीं चाहता। जिसने यह राधास्वामी मत चलाया है उसने भी संसार को धोखा नहीं दिया। वह कहते हैं कि गुरु के दर्शन अपने अन्तर करो—

गुरु का दर्श तू देखरी, तिल आसन डार।
शब्द गुरु नित सुनोरी, मल वासन जार॥

दुनियां उसको गुरु समझती है जो चमत्कार दिखाते हैं। यह सब धोखा है और लोगों को मूर्ख बनाया जा रहा। मैं हूँ संत सतगुरु वक्त का और सतज्ञान दाता। आजकल समाचार पत्रों में एक चर्चा चल रहा है कि एक गुरु कानून के विरुद्ध पांच छः लाख रुपये की चीजें या रोकड़ी अमरीका से भारत में लाया। लेकिन कस्टम वालों के पूछने पर भी इंकार कर गया कि मेरे पास कोई चीज नहीं है। अन्त में कस्टम वालों ने माल पकड़ लिया। अब आप ही सोचो कि जो गुरु ऐसा करता है उसके चेलों का कल्याण कैसे होगा।

आप देखते हैं कि शंकराचार्य जी के कितने मठ हैं। करोड़ों आदमी उनको मानते हैं लेकिन शंकराचार्य जी या उनके चेलों ने बुद्धों को जिन्दा जलाया या उनके साथ दुर्व्यवहार किया। जिस गुरु के मत में या धर्म में इंसानियत को बालाये ताक रखकर धर्म के नाम पर मनुष्यों का संहार किया जाता है क्या आप आशा कर सकते हैं कि उस गुरु को या उस धर्म को मानने वालों का कल्याण होगा! या उनको सद्बुद्धि मिलेगी या उनका आचरण ठीक होगा। इसलिये कहा जाता है कि पूर्ण गुरु की खोज करो। पूर्ण गुरु है पूर्ण या सच्चा ज्ञान। पूर्ण ज्ञान जहां से भी मिले, ले लो।

अज्ञान की भक्ति आरम्भ में अवश्य आनन्ददायक होती है लेकिन इसका परिणाम अच्छा नहीं होता। मैं खुश हूँ कि कुदरत मुझे ऐसी जगह लेगई कि मुझे उस सच्चे पुरुष की सच्ची बाणी को सुनने का अवसर मिल गया। तुम लोग तो यह सोचते हो कि तुम्हारे अन्तर शब्द प्रगट नहीं होता लेकिन हो कैसे? तुम्हारे अन्तर सांसारिक वासनायें मौजूद हैं। वह अभी तक समाप्त नहीं हुई। संसार की आशाओं में जीवन की चाह भी एक चाह है। जब तक किसी के अन्तर पूरी लगन नहीं है वह इस ओर चल नहीं सकता। इसलिये यह मार्ग दुनियांदारों के लिये नहीं है। यह मार्ग तो केवल उनके लिये हैं कि जो—

विषयों से जो होय उदासा।

धन संतान प्रीति नहिं जाके ।
खोजत फिरे साध गुरु ताके ॥

हुजूर महाराज ने 'सार बचन पद्य' में एक जगह लिखा है :—

आये भव जल नाव लगाई ।
हम से जीवन लिया चढ़ाई ॥
शब्द दृढ़ाया सुरत बताई ।
कर्म धर्म से लिया बचाई ॥

जो हुजूर महाराज की भावना वाले आदमी थे और जिनको अपने घर जाने की इच्छा थी केवल उनको दृढ़ाया, सबको नहीं । जिज्ञासुओं को ही रास्ता बताया । सब लोगों को नहीं । आजकल तो लोगों ने गुरुपने को जीविका का साधन बना लिया है । दो पुस्तकें बगल में दबाकर और गुरु बनकर उपदेश करते फिरते हैं ।

गुरु रूप सुहावन अति लगे, घट भान उजार ।
कमल खिलत सुख पावईं, भौंरा कर प्यार ॥

जब तक सांसारिक वासनायें समाप्त नहीं होतीं, तुम आगे नहीं जा सकते । इन वासनाओं में जीवित रहने की वासना भी शामिल है । अन्तर में जब प्रकाश उत्पन्न हो जायगा तो वह बहुत सुहावना होगा और वही गुरु का रूप है । कई आदमी मुझे कहते हैं कि बाबा जी ! अन्तर में आपका रूप तो दिखाई नहीं आता किन्तु प्रकाश आ जाता है । मैं उनको बता देना चाहता हूँ कि वही गुरु का रूप है । जिस तरह जब भौंरा फूल का रस चूसता है तो उसको आनन्द मिलता है ऐसे ही जब अन्तर में प्रकाश आ जाता है तो सुरत को बड़ा आनन्द मिलता है ।

गुरु ज्ञान न पाया हे सखी, जिन घट अंधियार ।
पूरा सतगुरु न मिला, भरमत भव जार ॥

गुरु ज्ञान के बिना कोई अपने घर नहीं जा सकता और आज शायद ही कोई पूर्ण ज्ञानदाता होगा । विशेष-विशेष पुरुषों के बारे में मैं नहीं कहता । इस कमी को देखकर कुदरत ने मेरे दिमाग को हिलाया ताकि जो लोग अपने

जीवन को बनाना चाहते हैं या अपने घर पहुंचना चाहते हैं वह इस ज्ञान को पाकर अपना जीवन बनालें।

मैं तो सतगुरु पाइयां, जाऊँ बलिहार।
ज्यों चकोर चन्दा गहे, रहूँ रूप निहार॥

मैंने आप लोगों की बदौलत सतगुरु या सतज्ञान प्राप्त किया है। दाता-दयाल जी महाराज ने मुझे सैन बैन या इशारों में बहुत कुछ कहा मगर मेरी समझ में न आया। लगभग दस वर्ष हुये होंगे कि मैं बम्बई गया। परसराम भी मेरे साथ था। परसराम की स्त्री आदमपुर में थीं। इसने बताया कि एक दिन बहुत सवेरे ही मुझे रेलगाड़ी पर जाना था। स्टेशन कुछ दूर है और रास्ते में अकेली थी और अन्धेरा था। मुझे डर लगता था। मैंने आपको याद किया और आप आ गये। मुझे स्टेशन पर पहुँचाकर आपने कहा कि अच्छा बेटी! अब मैं जाता हूँ और आप चले गये। अब मैं तो गया नहीं और न मुझे पता है। अब यदि इस ख्याल से यह मुझे गुरु मानती है तो यह गुरुमुख नहीं है। वह रूप जो प्रगट होता है वह तुम्हारे अपने मन का बनाया हुआ होता है।

यह व्यक्ति आदमपुर का फोटोग्राफर है। इसके हाथ पाँव पर छाजन था और यह बहुत दुखी था। व्यास, देहली और जहाँ-जहाँ जा सका बहुत घूमा फिरा मगर कोई लाभ न हुआ। इसने बताया कि बाबा जी! आपका रूप प्रगट हुआ और कहा कि मेरे पास आओ। फिर इसकी स्त्री मेरे पास आई। मेरे मुंह से निकल गया कि उसको घी ग्वार खिलाओ, ठीक हो जायगा। मालिक की मौज! वह इससे ठीक होगया लेकिन मैं इसके अन्तर नहीं गया।

मैं सतगुरु हूँ और सतज्ञान देता हूँ। यदि मेरे सतज्ञान के कारण तुम लोग मेरा आदर करते हो तो मुझे खुशी है। जहाँ से तुम्हारी सहायता होने वाली होती है वहाँ से हो जाती है। सच्चे हृदय से मालिक के आगे पुकार किया करो।

॥ मनुष्य बनो ॥

जिसको बाहर में प्रेम करने की आदत होगी वही अन्तर में प्रेम कर सकेगा। दूसरा नहीं ! इसलिये संतों ने ऊँची बात को पर्दे में रक्खा और संसार को पूर्ण गुरु की भक्ति की ओर लगाया। संत आडम्बर नहीं रचते किन्तु अधिकारी को देखते हैं और उसको विधि बता देते हैं। मेरे पास कोई आडम्बर की बात नहीं है। लेकिन यदि किसी को स्वाभाविक रूप से कही हुई बात पूरी बात हो जाती है तो फिर लोग मेरे पास आते हैं। परमार्थ के लिये कोई नहीं आता। कल चण्डीगढ़ से जो स्त्री और उसका पति आये हुये थे मैंने उनसे कहा कि देखो ! तुम परमार्थ चाहते हो। यदि तुम जीवन के बाकी दिन पति और स्त्री बनके न बिताओ तो तुमको परमार्थ मिल जायगा। जब तक तुम काम अंग की ओर से मुंह नहीं मोड़ोगे तुम परमार्थ की ओर नहीं जा सकते।

सतगुरु शब्द स्वरूप हैं, रहे अर्श मंझार।
तू भी सुरत स्वरूप है, रहो गुरु की लार॥

उन्होंने यह नहीं कहा कि मेरा गुरु पन्ना गली में है। वह तो कहते हैं कि सतगुरु आकाश अर्थात् तुम्हारी खोपड़ी में रहता हैं। उन्होंने अपने गुरु की इतनी सेवा की कि दुनियाँ में एक आदर्श स्थापित कर दिया। वह आपको गुरु का रूप बताते हैं कि तुम भी सुरत स्वरूप हो और अपनी सुरत को शब्द गुरु से जोड़ो मगर यहां तक हर एक आदमी पहुंच नहीं सकता, जब तक मन शुद्ध न हो। मन को शुद्ध करने के लिये सत्संग है। निष्काम सेवा करने से भी मन शुद्ध होता है। स्वार्थ के लिये तो सब ही सेवा करते हैं। निष्काम सेवा करो। गीता में भी निष्काम कर्म का बड़ा भारी फल बताया है सत्संग से बात को समझ लो। संगत अच्छी रक्खो। रेडियेशन का नियम काम करता है। जैसी संगत करोगे वैसे ही हो जाओगे। स्त्री के पास बैठने से काम अंग जागता है। जल के पास बैठने से ठण्डक और साधु के पास बैठने से शान्ति मिलती है। यहाँ रेलवे का एक रिटायर्ड ड्रायवर आता है। वह कहता है कि बाबा जी ! आपके पास बैठने से शान्ति मिलती है यद्यपि वह कोई अभ्यास भी नहीं करता। तो क्या मैं उस को शान्ति देता हूँ ? यह रेडियेशन का नियम काम करता है।

नैनन में गुरु रूप है, तू नैन उघाड़ ।
श्रवण में गुरु शब्द है, सुन गगन पुकार ।।

नैन उघाड़ने का अभिप्राय है समझ और विवेक प्राप्त करना । यह समझ और विवेक हैं तो तुम्हारे अन्तर में लेकिन सत्संग से उसको जाग्रत करना है ।

राधास्वामी कह रहे, यह मारग सार ।
जो जो मानें भाग से, सो उतरें पार ।।

राधास्वामी ने यह बचन कहे हैं । जो इनको मानेगा और यदि उसके भाग्य में होगा तो वह पार उतर जायगा । मैं भाग्यशाली हूँ कि रोज रोज की बाणी से मुझे समझ मिलती है । चूंकि यह बाणी मेरे अनुभव की पुष्टि करती है इसलिये मुझे खुशी मिलती है । तुम लोग गृहस्थी हो और तुम्हारी साँसारिक इच्छायें तुम्हारे आगे जाने में रुकावट हैं इसलिये तुम आगे नहीं जा सकते । हमेशा मौज मालिक पर रहो । हाय हाय करने से कुछ न होगा ।

लिखा लिलाट टरे नहिं टारा ।
भावी को को मेटनहारा ।।

उपाय करो मगर कल्पनायें मत करो । पुरुषार्थ करो लेकिन यदि असफलता भी हो तो चिन्ता मत करो । हम इस दुनियाँ में रहते हैं लेकिन हमेशा तो यहां नहीं रहेंगे । एक दिन अवश्य चले जाना है । जैसे इस दुनियाँ में रहते हुए तुम लोग अपने बाल बच्चों के लिये सामान जमा करते हो ऐसे ही अपने परलोक के लिये भी सामान इकट्ठा करो । दातादयाल जी महाराज ने एक पुस्तक "अपना धन आकाश में जमा करो" नामी लिखी थी । उसमें उन्होंने लिखा है कि अच्छे संस्कार और अच्छे विचार रक्खो । नेकी और परमार्थ के विचार रक्खो । इनके जो संस्कार तुम्हारे दिमाग पर पड़ेंगे यही अन्त समय में तुम्हारे सामने आयेंगे । मैंने रेल और तार का काम बड़े ध्यान और परिश्रम से किया है । इसलिये मैंने वह धन जो आकाश में जमा किया हुआ है अर्थात् वह जो रेल और तार के संस्कार मेरे दिमाग पर पड़े हैं वह अब तक भी मेरे स्वप्न में आ जाते हैं । इसलिये यदि तुम परमार्थ, वैराग और परस्वार्थ के संस्कार अपने दिमाग में रक्खोगे तो यह जो तुमने अपने आकाश में धन जमा किया है यह तुम्हारे अन्त समय पर तुम्हारे काम आयेगा । ❀❀

श्रीकृष्ण चेतन महाप्रभु जी की कथा

(ले०—महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज)

जब जब धर्म की हानि होती है तब-तब किसी न किसी रूप में उसकी रक्षा के लिये विष्णु का रूप प्रगट होता है। उनके इतने रूप हैं कि उनका जानना, समझना और बताना असम्भव है। इनमें से हर चतुर्युग में तो दस अवतार मुख्य होते हैं बाकी और अनगिनत समझे जाते हैं। महा प्रभु श्रीकृष्ण चेतन को लोग कृष्ण का अवतार समझते हैं। यह बहुत ही सुन्दर सुकुमार और प्रेमी थे। यह पहिले बताया गया है कि यह नित्यानन्द जी के छोटे भाई थे। वह तो बलराम या बलभद्र के अवतार माने गये और यह गोरे चिट्टे होने पर भी कृष्ण के अवतार समझे गये। इनकी माता का नाम शुचि था।

यह बचपन ही से भक्ति भाव के प्रचार में लग गये। राग के गाने में निपुण थे। गाते-गाते प्रेम में मग्न और बेसुध हो जाते थे। जो लोग साथ रहते थे वह भी इन्हीं के रंग में रंग कर अचेत हो जाया करते थे। जैसे खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है वैसे ही इन सब का हाल था। इनका कथन था "वह प्रेम ही क्या है जो प्रेमी को प्रीतम का रूप न बना दे। जो प्रीतम के ध्यान में तन की सुध बुध को नहीं भूल जाते उन्हें अभी प्रेम का स्वाद ही नहीं मिला। जिस प्रकार क्रोध के समय वह क्रोध का रूप बन जाता है वैसे ही प्रेम के मन में आते ही वह साक्षात् प्रेम बन जाता है। प्रेम आँखों से प्रगट होता है। यह प्रेम खोदने वाले कारीगर के समान है। जब दिल को खोद देता है दोनों आँखों से आंसू की धारें बहने लगती हैं। पानी की बूंदों की बौछार से मनुष्य को ठंडक मिलती है वैसे ही प्रेमी की संगत से मनुष्य में प्रेम उत्पन्न होता है। जैसे पानी से सर्दी और आग से गर्मी मिलती है वैसे ही प्रेम से करुणा, दया और आनन्द का रस मिलता है। नदी में डुबकी लगाने से ऊपर नीचे दायें बायें पानी आ

जाता है वैसे ही प्रेम के समुद्र में नहाने से सर से पाँव तक मनुष्य प्रेम से लत पत हो जाता है। प्रेम ही सच्चा योग है। प्रेम ही सच्चा ज्ञान है। बिना प्रेम के योग भी व्यर्थ परिश्रम है और ज्ञान भी महा कुरस हो जाता है।"

जब यह अभी सात वर्ष के थे केशव भट्ट नामक काशमीरी पंडित बंगाल में आया। यह संस्कृत विद्या का महान् पण्डित था। इसे शास्त्रार्थ करके पण्डितों के हराने की धुन थी। बंगाल में नदिया शान्तीपूर के नैयायिक न्याय शास्त्र में निपुण होने के लिये प्रसिद्ध थे। केशवभट्ट भी न्याय शास्त्र का अच्छा विद्वान था। सारा संसार उसका लोहा मान गया था। नदिया के पण्डित डरे। किसी को सिवाय इसके और कुछ न सूझी कि महा प्रभु चेतन सात वर्ष के लड़के की शरण लें। वह शास्त्रार्थ के लिये खड़े किये गये। यह आये—शान्ति के रूप ! प्रेम की मीठी सोहनी मूर्ति ! आते ही इन्होंने अपना प्रभाव डाला। वह बाल की खाल निकालना भूल गया, पाँवों पर गिरा और शिष्य हो गया। फिर तब से वाद विवाद और शास्त्रार्थ का नाम तक नहीं लिया।

एक बार आप जगन्नाथपुरी की यात्रा को गये। वहाँ लोगों का विश्वास था कि पुरी में प्रत्येक मनुष्य विष्णु की चतुर्भुजी मूर्त्ति है। आप कीर्त्तन करने लगे। लाखों मनुष्य इनके चारों ओर इकट्ठे हो गये। जब प्रेम का मण्डल बँध गया सब ने देखा कि कीर्त्तन करने वालों के बीच में महा प्रभु चेतन के कन्धों के साथ ६ भुजायें लगी हुई हैं। यह महा विचित्र दृश्य था। सब देखकर दंग रह गये और समझ गये कि यह आप विष्णु के रूप है। इस घटना के स्मरण रखने के लिये वहाँ एक मन्दिर में विष्णु की षटभुजी मूर्त्ति बनाई गई जो अब तक रक्खी हुई है।

जब यह कीर्त्तन किया करते थे तो कभी-कभी घर के द्वार पर किसी भक्त को चौकीदार बना दिया करते थे जिसमें कोई विरोधी न आने पाये और सब लोग गाने बजाने में लग जाते थे। यह नित्य नियम नहीं था। कभी-कभी ऐसा किया जाता था। एक बार कीर्त्तन होने के पश्चात कुछ

लोग पूछने लगे "महाराज ! हमारी मुक्ति में कितने जन्म की देर है ?" उन्होंने किसी को एक जन्म किसी-किसी को दो दो तीन तीन जन्म और किसी को चार जन्म की देर बताई। एक मनुष्य ने पूछा "जो भक्त द्वार पर बैठा हुआ पहरा दे रहा है उसकी मुक्ति कितने जन्म में होगी ?" आप हँसे, "अभी उसको कई जन्म लेने पड़ेंगे परन्तु भगवान का दर्शन होगा और उसकी मुक्ति होगी।" संयोगवश चौकीदार ने यह बात सुन ली और प्रेम में मग्न होकर चिल्ला उठा—"चाहे करोड़ जन्म हों दर्शन तो मिलेगा।" यह कहकर वह भी बाहर कीर्त्तन करने लगा। उसके गाने की भनक अन्दर सुनाई देने लगी। आप सुनते ही उछल पड़े और प्रेम के आँसू बहाते हुये बाहर आये। उसे गोद से चिमटा कर कहने लगे "बावले ! तेरी मुक्ति तो अभी इसी जन्म में इसी समय हो गई। इस क्षण मात्र के प्रेम में तेरे अनगिनत जन्म हो गये क्योंकि तुझ में बहुत ही धैर्य है जो सच्चे प्रेम का चिन्ह है। और लोग केवल नाम के प्रेमी हैं।" यह कहकर उसे गले से लगाये हुये नाचने और गाने लगे। उस दिन का कीर्त्तन बहुत ही रसीला था।

दोहे

प्रेम भाव इक चाहिये, गहिरा निर्मल होय।
ऐसे जन की मुक्ति में, संशय करै न कोय ॥ १ ॥
प्रेम भाव इक चाहिये, चाहे जैसा भेस।
एक प्रेम के आसरे, पहुंचे सतगुरु देस ॥ २ ॥
प्रेम भाव इक चाहिये, प्रेम महा बलवान।
प्रेमहि धुर पद इष्ट पद, प्रेम मुक्ति निर्वान ॥ ३ ॥
प्रेम भाव इक चाहिये, और सकल हैं साँग।
प्रेम रत्न धन माँगिये, गुरु से और न माँग ॥ ४ ॥
आँखों में लाली रहै, बरसै आँसू धार।
प्रेम मगन जब मन भया, प्रगटा उत्तम सार ॥ ५ ॥

* स्वास्थ्य के उत्तम नुसखे *

(ले०—सेठ दुर्गादास, चण्डीगढ़)

१—सूर्य उदय होने से पहिले शौच जाना और स्नान करना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है। यदि किसी कारण देर हो जाय और सूर्य निकल आये तो सूर्य की ओर मुंह करके शौच नहीं जाना चाहिये।

२—प्रातः सूर्य उदय होने से पहिले और सायं को सूर्य छिपने के बाद (सायकाल के भोजन के बाद) बिना नागा किये एक दो मील नित्यप्रति तेज चाल से भ्रमण करना चाहिये।

३—शौच जाने से पहिले प्रातःकाल के समय गर्मी की ऋतु हो चाहे शीत ऋतु हो, रात का रक्खा हुआ पानी एक दो सेर जितना पेट भटकर पी सको पीलो। कब्ज की शिकायत कभी न होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

४—नाक से गाय का दूध पीने से गले से ऊपर ऊपर की और सिर की कोई बीमारी न होगी।

५—स्नान करने से पहिले सरसों का तेल मालिश करना चाहिये। यदि प्रतिदिन संभव न हो तो हफ्ते में दो तीन बार अवश्य करनी चाहिये।

स्नान करने के समय सरसों के तेल को दो दो उंगलियां गुदा चक्र, नाभी,
...न लगाओ। पांव के नाखूनों पर और पांव के नीचे
नाक...

अधि... ...ला भोजन करो। स्वयं निश्चय कर सकते हो कि
... स्वास्थ के लिये लाभकारी है और कितना भोजन
कौ... कम ही खाना चाहिये ताकि शरीर का मोटापन न
चा... कम से कम एक बार तुला लेना चाहिये यह देखने के
बढ़... नहीं रहा है। यदि वजन अधिक हो गया हो तो तुरन्त
लि... करलो। भोजन कम करो। भ्रमण अधिक दूर तक
अ... दवा प्रयोग करो। अन्न बिल्कुल छोड़ देने से शरीर
है...

कहा जाता है कि अमीर $\frac{1}{3}$ भाग भोजन अपने लिये खाता है और $\frac{2}{3}$ भाग डाक्टरों के लिये। पोलिन ने एक बार कहा कि आदमी यह कहता है कि मैं थोड़ा भोजन खाता हूँ। वह वास्तव में अधिक खाता है क्योंकि वह अपना भोजन और भी कम कर सकता हैं।

७—भोजन के बाद एक आध घंटे बाद पानी पीना चाहिये।

८—पेशाब करने के बाद पानी नहीं पीना चाहिये। ह[illegible] [illegible] पीकर पेशाब किया जाय। खाना खाने के बाद पेशाब अवश्य करना चाहिये।

९—हफ्ते में एक बार स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

१०—जब काम करो तन मन से व्यस्त हो जाओ कि समय का भी ध्यान न रहे। ऐसे काम को ईश्वर की भक्ति में शामिल कर सकते हो।

११—जल्दी सोदा और जल्दी उठना जीवन की सफलता का रहस्य है। मनुष्य के लिये ६ घंटे से अधिक नहीं सोना चाहिये। दिन को सोना बच्चों और बूढ़ों का काम है।

१२—शारीरिक और दिमागी आराम के लिये गहरी नींद [illegible] चाहे नींद थोड़ी हो। स्वप्न की नींद अधिक समय तक सुस्ती लाती है

१३—शरीर बलवान बनाने के लिये व्यायाम, प्राणायाम, कुश्ती, द[illegible] पहाड़ की चढ़ाई, तैरना, घोड़े की सवारी आदि हैं लेकिन शरीर को बल-शाली बनाने से मानसिक उन्नति रुक जाती है। मानसिक [illegible] की वृद्धि अध्यात्म में सहायक सिद्ध होती [illegible] शक्ति या बुद्धि

१४—जैसे अधिक भोजन से कब्ज [illegible] और रोग का भय रहता है इसी प्रकार मन को अधिक [illegible] कार के विचार भर देने से मन चंचल हो जायगा। विचा[illegible] गे। सम्भव है उन्मचना कायम हो जाय।

१५—निरोगता का नाम स्वास्थ्य है [illegible] और मन और आत्मा की समता का नाम स्वास्थ्य है। ती[illegible]

१६—स्वास्स्य के होने पर भी दुनियाँ [illegible] हर काम में अच्छी और तेज स्मरण शक्ति का होना पहिले [illegible]

उपदेश

(परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज)

कुदरत ने जो ड्यूटी तुमको दी है उसको पूरा करो और समझलो कि के चला जाना है।

ऊंचा महल चिनावते, करते होड़म होड़ ।
सुवरण कली ढलावते, गये पलक में छोड़ ॥
पांच तत्व का पूतला, मानस धरिआ नाम ।
दिना चार के कारने, फिर फिर रोके ठाम ॥
कबीर मन्दिर लाख का, जड़िया हीरा लाल ।
दिना चार का पेखना, बिनस जायगा काल ॥
कबीर मरेंगे मर जायेंगे, कोई न लेगा नाम ।
ऊजड़ जाय बसायेंगे, छोड़ बसन्ता गाम ॥
मौत बिसारी बावरे, अचरज कीया कौन ।
तन माटी मिल जायगा, ज्यों आटे में नौन ॥
जन्म मरन दुख याद कर, कूढ़े काम निवार ।
जिन जिन पंथों चालना, सोई पथ संवार ॥

यह है सनातन धर्म ! 'जिन जिन पंथों चालना, सोई पंथ संवार।' हम दुनियां में आये हैं। यह संकल्प की दुनियां है। कोई किसी संकल्प को लेकर चलता है, कोई किसी मार्ग पर चलता है। कोई कर्म योग से, कोई भक्ति योग से, कोई ज्ञान योग से चलता है। अपना-अपना कर्म करो। उसमें सच्चे रहो। कबीर कहते हैं :—

जन्म मरन दुख याद कर, कूढ़े काम निवार ।
जिन जिन पंथों चालना, सोई पंथ संवार ॥

हम इस जन्म में कर्म करते हैं। मैं ब्राह्मण हूँ। ज्योतिष जानता हूँ। कर्म
... मित्र आदि के जन्म पत्र मैंने

भृगुसंहिता से निकाले। उनके हालात ठीक निकले। पिछले जन्म में जो कुछ किया हुआ है हमको भरना पड़ता है। एक व्यक्ति रघुवीरसिंह नाम का था। राजपूत था। उसको फोड़ा हो गया। डाक्टरों ने कह दिया कि केंसर है। वह मेरे यहाँ मानवता मन्दिर में आ गया और वहीं आकर उसकी मृत्यु हुई। मरने से दो तीन दिन पहिले मैंने उसकी कुण्डली भृगुसंहिता वाले ज्योतिषी के पास भेजी। वह मेरे परिचित थे। वह वहाँ से मुझे सुनाने के लिये आये। उसमें लिखा हुआ था कि यह व्यक्ति पिछले जन्म में साहूकार घाटा पड़ गया। फिर किसी का मुनीम हो गया।

वह व्यक्ति, जिसका वह मुनीम हुआ था, मर गया। उसने चालाकी उसकी सारी सम्पत्ति अपने नाम लिखा ली। अब यह जन्म लेता है। ज में मर जाता है। वह जो उस सेठ के बच्चे हैं वह इसके रिश्तेदार बनते अब ७०-७५ हजार रुपया छोड़ गया। मैं शायद गलती भी मान लेता उसमें एक दो पौइन्ट मुझे मिले। एक तो मेरे विषय में लिखा था और उसके विषय में कि उसके कुटुम्ब का कोई रिश्तेदार उसके बच्चों की करेगा। कोई इसके रिश्तेदारों में से था जो मिलटरी में नौकर था वह मर गया उसने नौकरी छोड़दी। अब उसके मकान पर बैठा हुआ है तो मुझे निश्चय हुआ कि हम सब कर्म के फल भोगते हैं। सनातनियों को चाहिये जो कि कर्म को मानते हैं अपने आपको संभाल कर रक्खें। कोई व्यक्ति कर्म को नहीं मानता। वह यदि अपने कर्म को ठीक नहीं करता, उस पर कोई पाप नहीं मगर जब हम मानते हैं कि हमारा कर्म हमको अगले जन्म में आता है, फिर हम गलती खाते हैं। फिर जो जान बूझकर गलती करता है उसका दण्ड तो उसको मिलेगा। हम कर्म और धर्म से अपने कर्मों के फल से बच कैसे सकते हैं! आप यहाँ क्यों आये हैं? कहेंगे सत्संग को। सत्संग से क्या मिलता है?

बिन सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥

सत्संग से सच्ची समझ मिलती है। वह समझ मिलती है, जिससे तुम इस लोक में सुखी हो, और परलोक में भी सुखी हो। यदि जिज्ञासु आता है, तो ध्यानपूर्वक सुनेगा। जो तमाशा देखने आता है, वह और बातें सोचता रहेगा। इसलिये सत्संग केवल अधिकारियों के लिये होना चाहिये। सत्संग तमाशा नहीं है और न यह मेला है। यह तो दुनियां ने तथा हम लोगों ने एक तमाशा बना लिया है। जिस तरह और विषय हैं इसी तरह सत्संग भी एक विषय बन गया है। सत्संग बड़ी भारी वस्तु है, बशर्ते कि कोई सत्संग का अधिकारी मिले। सत्संग की कदर करने वाले बहुत कम लोग हैं। आदमी बीमार होता है। डाक्टर के पास जाता है। बड़े अदब से बैठता है। यदि टीका लगाने के दस रुपया भी माँगे तो दस रुपया निकाल कर दे देता क्योंकि उसकी गरज होती है। सत्संग में तुमको मोती मिलते हैं, हीरे मिलते हैं। तुम उसकी कदर नहीं करते। सत्संग के बचनों को इस कान सुन के उस कान से निकाल देते हो। क्या लाभ ? यदि मेरे वश में हो तो रात को दो बजे सत्संग रक्खूं मगर तुम लोगों ने माना नहीं। जिनको आवश्यकता हो वह उस समय आयें। यहां वह हिसाब है :—

बेकदरों की दोस्ती तें क्यों केती हंस।
माँस माँस तेरा सेंहा चट गया, और गुलिल्याँ रल गये पंख ॥

के लिये आये हैं, उनको कहता हूँ कि अपने मन वचन कर्म करो।

है । किसी और को नहीं करनी है । तुमको मन को कंट्रोल (Control) में रखना है । गुरु महात्मा क्या करते हैं ? सत्संग कराते है । तुमको मन के वश करने का तरीका या बिधि बताते हैं । इस विषय पर कल बताऊंगा ।

गुरु क्या करे ! क्योंकि कर्म तो तुमने करने हैं । जो तुम बोओगे वह मिलेगा । गुरु या महात्मा ने तुम्हारी प्रकृति के अनुसार जैसी तुम्हारी सभ्यता है, तुम्हारी प्रकृति है, तुम्हारे विचार हैं उसके अनुसार तुमको ऐसा गुर बताता है जिस गुर से कि तुम अपने मन के विचारों को वश में कर सको । सब के लिये एक तरीका नहीं है । हर एक आदमी की प्रकृति अलग अल है । कोई कर्म योग का अधिकारी, कोई भक्ति योग का, कोई ज्ञान योग क कोई स्वाध्याय का अधिकारी है । कोई किसी बात का, कोई किसी बात क इसलिये मैं गुरु मत का मानने वाला हूँ । मेरे मत में है :—

गुरु जो कहें सो चित धर ध्यान ।
गुरु जो कहें सो हित कर मान ॥

जीव को पता नहीं कि उसकी गढ़त कैसे होती है । डाक्टर बेहतर जानता है कि बीमार को दवाई कैसी देनी है । इस बीमार को बीमारी है क्या ? वातावरण कैसा है ? मौसम कैसा है ? इसकी प्रकृति कैसी है ? इस को खुराक भी मिल सकती है कि नहीं मिल सकती ? ह
ध्यान रखता है । इसलिये मेरा मार्ग है गुरु मत
दातादयाल ने और

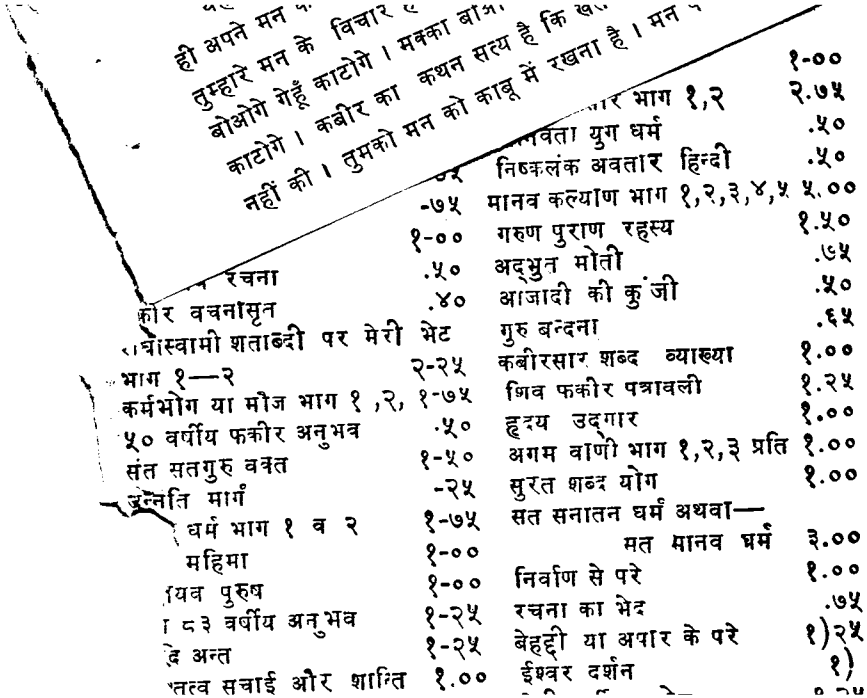

ही अपने मन ...... विचार ......
तुम्हारे मन के विचार ...... मक्का बोओ......
बोओगे गेहूँ काटोगे । मक्का बोओ...... कि ख......
काटोगे । कबीर का कथन सत्य है कि ख......
नहीं की । तुमको मन को काबू में रखना है । मन ......

-७५
१-००
...... रचना .५०
...कीर वचनामृत .४०
...स्वामी शताब्दी पर मेरी भेट
भाग १—२ २-२५
कर्मभोग या मौज भाग १,२, १-७५
५० वर्षीय फकीर अनुभव .५०
संत सतगुरु वक्त १-५०
उन्नति मार्ग -२५
...धर्म भाग १ व २ १-७५
...महिमा १-००
...यव पुरुष १-००
... ८३ वर्षीय अनुभव १-२५
...दि अन्त १-२५
...तत्व सचाई और शान्ति १.००

...... १-००
...र भाग १,२ २.७५
...वता युग धर्म .५०
निष्कलंक अवतार हिन्दी .५०
मानव कल्याण भाग १,२,३,४,५ ५.००
गरुण पुराण रहस्य १.५०
अद्भुत मोती .७५
आजादी की कुंजी .५०
गुरु बन्दना .६५
कबीरसार शब्द व्याख्या १.००
शिव फकीर पत्रावली १.२५
हृदय उद्गार १.००
अगम वाणी भाग १,२,३ प्रति १.००
सुरत शब्द योग १.००
सत सनातन धर्म अथवा—
मत मानव धर्म ३.००
निर्वाण से परे १.००
रचना का भेद .७५
बेहद्दी या अपार के परे १)२५
ईश्वर दर्शन १)

Regd. No. A—808

महारामायण सजिल्द	७-००
गीता भाग १ व २	२-५०
नानक योग	४-००
राधास्वामी योग	६-००
कबीर योग भाग १,२,३	५-१५
कर्मयोग रहस्य	१-००
Light on Anand Yog	३-००
आनन्द योग प्रकाश	२-५०
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	२-००
कबीर की साखी	२-००
पंथ सन्देश	३-००
शब्द गुञ्जार भाग १,२ ३	४-५०
विचार शक्ति अथवा मनोविज्ञान	१-५०
विचार दर्पण	१-००

आदेश
धर्म

ग्राहक सं०

397. C. Gajraj Mysker Hindi Pandit
Rathode Building
Pochamma Gali
Jumerat Bazar
Nizamabad (A.P.)